Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 3 | MARCH 2020

''मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ''

स्पना [1]

[1] प्राध्यापक हिन्दी वार्ड नं. 11, थेड़ी, तह० श्रीकरणपुर, जिलाः—श्रीगंगानगर (राज०) पिन कोड़ः— 335073

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावनाः—

कहानी अपने आप में विकसित एक स्वतन्त्र कला है। विकास को प्राप्त करते—करते आज कहानी का स्वरूप काफी बदल गया है। वह आज के युग की बड़ी उपयोगी कला है। आज का कहानीकार जीवन के अन्तर और बाह्य में स्थित तनाव, द्वन्द्व और त्रासद स्थिति के प्रति पाठक को सजग करता है। हिन्दी—साहित्य अन्य साहित्यागों की अपेक्षा गतिशील है। कहानी साहित्य का वह अंग है जिसमें कल्पना, भावोन्मेष तथा मनोरंजन के साथ—साथ ज्ञान विशेष भी निहित रहता है। अतः कहानी मानव जीवन के सत्यों का गहराई के साथ रहस्योद्घाटन करती है।

हमारे समाज में विभिन्न धर्मों जातियों, सम्प्रदायों तथा वर्गों के लोग रहते है। अपने—अपने पारिवारिक माहौल और वातावरण के अनुसार ही वे अपना जीवन व्यतीत करते है। यदि हम वर्गों की बात करें तो हमारे समाज को आर्थिक आधार पर उच्च, मध्यम और निम्न तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।

हिन्दी साहित्य कोश में मध्यवर्ग के संदर्भ में लिखा हैः— ''पूजीवादी अर्थव्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई जो इस जटिल व्यवस्था के संगठन सूत्र को संभाल सकें। इस वर्ग में नौकरी पेशा शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेष तथा बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रान्ति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है।

मध्यवर्ग के सम्बन्ध में डाॅ० लाजपतराय गुप्त लिखते है— ''धनवान व्यापारी तथा उच्च सरकारी नौकरी प्राप्त व्यक्ति पूँजीपति वर्ग के अधिक निकट है और छोटे—छोटे व्यापारी तथा सरकारी सेवा में साधारण व्यक्ति जो श्रमिक वर्ग से कुछ अधिक सम्पन्न है, वे व्यक्ति मध्यवर्ग में गिने जाते है''

मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ निम्नांकित बिन्दुओंः—

(क) यौन समस्याएंः

इनकी कहानियों में यौन समस्याओं के भी विशेष चित्रण मिलते है। ग्रामीण और शहरी परिवेश की प्रेम और यौन—संबंधों की कहानियों के विवेचन—विश्लेषण के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि मार्कण्डेय का मन अपेक्षाकृत ग्रामीण परिवेश की कहानियों में अधिक रमा हुआ है। इनकी शहरी परिवेश की प्रेम—कहानियाँ बहुत कम है लेकिन उनमें नैतिक मूल्यों को तोड़ने और नवीन मूल्यों के इर्द—गिर्द जीवन की तलाश की समानता अवश्य दिखायी देती है। परंपरागत नैतिक मूल्यों के प्रति अनास्था और विद्रोह का एक स्तर 'प्रिया—सैनी' की इंसान की खोज में और 'मिस शान्ता' कहानी की शांता की अघोषित रूप से चलती जीवन और प्रेम की तलाश की ही एक मुखर अभिव्यक्ति है। 'सूर्या' 'सात बच्चों की माँ', 'संगीत, आँसू और इंसान' 'माही' आदि कहानियों में भी यह समस्या चित्रित है।

(ख) नारी—जीवनः

मार्कण्डेय की अधिकांश कहानियों के केंन्द्र में नारी—जीवन है। इनकी नारी—जीवन से संबंधित कहानियों के अलग—अलग स्तर है। कहानियों के नारी पात्रों की वर्गीय संरचनाएँ भी अलग—अलग है और साथ ही इनके नारी पात्रों की उम्र में भी अंतर है। इनकी कहानियों में एक और मृणालिनी है जो 'वासवी की माँ है, 'सात बच्चों की माँ' सन्तों है, 'जीवन के दुःख—सुःख जानने वाली घूरा, महाराजिन, मंगी, दुखना और गुलाबी है तो दूसरी ओर कम उम्र की वासवी, नीहार पियारी, माही, सूर्या और प्रिया सैनी है। इनके साथ ही दो छोटी—छोटी बच्चियाँ है— नीलि तथा रितिया। मार्कण्डेय की कहानियाँ के ये नारी—पात्र उनकी विचार—योजना उनकी सोद्देश्यता के कई पक्षों को दर्शाते हैं। ये सभी पात्र नारी—जीवन की समस्याओं को लेकर जहाँ वे सामाजिक स्तर पर जूझते है, वहाँ उनकी कहानियाँ सहज मर्मस्पर्शी हो पायी है। 'वासवी की माँ' से प्रिया सैनी तक की नारी—पात्रों के जीवन का वस्तुगत संदर्भों में मूल्याकंन किया है।

(ग) शहरी जीवनः

मार्कण्डेय की कुछ कहानियाँ का संबंध शहरी जीवन से है। यद्यपि शहरी—जीवन के चित्रण में भी वे पूरी तरह सफल है लेकिन ग्रामीण—जीवन के चित्रण में उन्होंने जिस आत्मीयता और रूचि का परिचय दिया है, उसके दर्शन उनकी नगरीय जीवन से संबंधित कहानियों में नही होते। नगर बोध से संबंधित अपनी कहानियों में उन्होनं मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताएँ, समस्याएँ और विसंगतियों को यथार्थ संदर्भों में उद्घटित करने का प्रयास किया है। इन कहानियों में उन्होंने यौन—कुंठाओं को विषय बनाया है। 'प्रिया सैनी' और 'मिस शांता' ये दोनो शहरी—जीवन पर आधारित महत्वपूर्ण रचनाएँ है।

(घ) व्यंग्य की प्रवृतिः

मार्कण्डेय की कहानियों में वर्ग व्यवस्था, जमींदारी व्यवस्था, गरीबी आदि परिस्थितियों में भी बड़ी निर्भयता के साथ व्यंग्य करने की प्रवृति देखी जा सकती है। साथ ही जाति और वर्ण, धर्म संप्रदाय की कट्टरता के संदर्भ में सामाजिक व्यवस्था की भी निर्ममता पर व्यंग्य किय गया है। 'दाना—भूसा' का बंसन एक ईमानदार व्यक्ति है, कर्मठ है और पारिवारिक रागात्मकता को निभाने वाला है। एक जिम्मेदार पिता तथा अनुरागमय पति भी है और वह श्रम के बल पर जीना चाहता है। कुछ बेहतर जीवन जीने की ईमानदार कोशिश करता है। लेकिन यह सामाजिक व्यवस्था उसे कोई सुविधा नहीं देती है। इस तरह जमींदारी व्यवस्था, बेरोजगारी और सामाजिक व्यवस्था के कारण बंसन और उसके परिवार को आर्थिक विपन्नता और भूखमरी को झेलना पड़ता है। जीवन की इस वास्तविकता के द्वारा व्यंग्य के माध्यम से यह ध्वनित किया गया है कि सामाजिक निर्ममता व्यक्ति को कैसे तोड़ देती है। ऐसा समाज जंगल या रेगिस्तान की तरह ही है।

व्यंग्य की यही गंभीरता मार्कण्डेय की 'भूदान', 'आदर्श कुक्कुट गृह', वासवी की माँ, 'माही' जैसी प्रायः सभी कहानियों में देखने की मिलती है।

मोह—भंग करना लेखक का, कलाकार का दायित्व है। रामजतन बनसती माई की मनौती करता है तो 'एक लोमड़ी खुर—खुर कर सती के चौरे से निकली' और परिणाम वही होना था जो रामजतन के साथ होता है।

इस प्रकार उनकी कहानियों में सभी स्तरों पर व्यंग्य करने की प्रवृति पाई जाती है।

(ड़) प्रेम संबंधः—

मार्कण्डेय की सामाजिक सरोकार वाली विविध कहानियों के साथ—साथ नारी—जीवन और प्रेम संबंधो पर आधारित ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन की कहानियों में ये सारी चीजें दिखायी देती है। ग्रामीण संवेदना की कहानी 'बिदी' में जीवन की जटिलताओं

के भीतर परंपरागत नैतिक मान्यताओं के बदलने की स्वाभाविकता कथात्मक अभिव्यक्ति हुई है। शहरी जीवन की कहानियों 'माही', 'सूर्या', तारों का गुच्छा', 'पक्षाघात' आदि में एक तरह के उलझाव के बावजूद भी जीवन की बुनियाद पर रूढ़ मान्यताओं के टूटने के स्वर सुनाई पड़ते है।

'रेखाएँ', 'सात बच्चों की माँ, 'मिस शान्ता', ' अगली कहानी', 'बिंदी, 'सूर्या' ' आँखे', प्रिया सैनी' जैसी कहानियाँ जीवन की शर्तों पर परंमराओं, रूढ़िओं की परवाह किए बिना चलती है। इन कहानियों के माध्यम से विवाह और प्रेम–संबंधी एक नयी दृष्टि विकसित होती हुई दिखाई पड़ती है।

(च) बीच के लोगः

बीच के लोग मार्कण्डेय का सातवाँ कहानी संग्रह है। यह मार्कण्डेय की कहानियों का एक चर्चित संग्रह है। इसमें कथ्य के विस्तार को देखते हुए इनकी दुनिया ही अलग–अलग पहचान में आती है। बीच के लोग इसी दुहरी दुनिया की तस्वीर है। प्रस्तुत संग्रह में ग्रामीण और शहरी दोनो की प्रकार के परिवेशो संबंधित छः कहानियाँ है।

डॉ॰ सुरेन्द्र चौधरी के अनुसार–'' बीच के लोग में एक सवाक् स्पष्टता है। सामाजिक–राजनीतिक हाशियों को तोड़े बगैर पक्षधरता और न्याय का संघर्ष आगे नहीं बढ़ेगा। इन बाधक तत्वों से खुली हुई लड़ाई अपेक्षित है। कहानी में इस बारीक राजनीतिक कथ्य को ग्रामीण जीवन की परिस्थितियों में और घटनाओं में संयोजित करके मार्कण्डेय ने अपनी कलात्मक क्षमता का परिचय दिया है। इसमें काफी जटिलता है। यह जटिलता आज के ग्रामीण परिवेश और वास्तविकता की है। अब भी बीच के लोग इस टूटती हुई दीवार को सहारा देने की चेष्टा में भरसक लगे है। यही जटिलता इस कहानी की आत्मा है।

ओमप्रकाश ग्रेवाल के अनुसार–''यद्यपि ऊपर से यह कहानी प्रेमचंद की वर्णन शैली को अपनाकर चलती हुई दिखायी देती है किंतु उसके शिल्प में तर्कपूर्ण स्थान है।

''बीच के लोग'' कहानी घोषित रूप से ठाकुर और बिरादरी के है। उदारवादी प्रवृति के ये सारी चरित्र गाँधीवाद से प्रभावित है और इन चरित्रों के भीतर गाँधीवाद के अंतर्विरोध भी स्पष्ट रूप से लक्षित है।

प्रस्तुत कहानी मार्कण्डेय जी की लंबी कहानियों में एक है। कहानी का कथानक अत्यंत सुगठित और विस्तृत है। यह गाँव में उठने वाली चेतना है, तो 'जस की तस' के स्थान पर परिवर्तनकामी है। एक ऐसे परिवर्तन के लिए जो शोषण मुक्त समाज के निर्माण में सहायक हो। यह कहानी गाँव में उभरने वाली वर्ग–चेतना के साथ बदलते संबंधों एवं मूल्यों को भी उद्घाटित करती है।

(छ) गेनेसीः

गेनेसी कहानी में लेखक पुराने संस्कारों की जड़ता से बाहर निकालने का आग्रह करते है। कहानी का कथ्य यद्यपि संक्षिप्त है किंतु प्रभावशाली है। गनेसी कहानी के अंत में सुअर के साथ संघर्ष में मरकर वह अपने साहस का परिचय तो देता ही है और गाँव वालों को सुअर का माँस खाने के लिए मजबूर क रवह पुराने एवंज ड़ संस्कारों पर प्रहार भी कर जाता है। मधुरेश के शब्दों में ''उसकी मौत रूढ़ियों एवं स्वार्थ के अंधेरे में परेशानी की एक लीक जैसी बनकर खड़ी हो जाती है।''

'प्रिया सैनी' एक लंबी कहानी है। यह कहानी शहरी जीवन से संबधित है। इस कहानी में लेखक ने अनेक महत्वपूर्ण संदर्भों को भी उठाया है और मध्यवर्गीय मानसिकता का सूक्ष्म विश्लेषण भी किया है।

सुरेन्द्र चौधरी के अनुसार ''अजनबी पुरूष को समर्पित और प्रेती पुरूष की पिछड़ी मानसिकता से अभिशप्त नारी की संकल्प–सिद्ध स्वतंत्रता का संवादी स्वर ही बार–बार सुनाई पड़ा है। यहाँ कहानीकार नारी समस्या को मात्र वैचारिक कथ्य के स्तर पर ही देखने के बजाय उसका एक निति वैयक्तिक और गहार अर्थ भी उद्घाटित करता है।

मार्कण्डेय स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य को हिंदी के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार मार्कण्डेय जी का योगदान अविस्मरणीय है। उनके सरल एवं विनयशील व्यक्तित्व पर भारतीय साहित्य, ज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि का अत्यधिक प्रभाव रहा है, जिसकी छाप उनके साहित्य में स्पष्ट रूप रूप से झलकती है। उनका समूचा साहित्य इसकी अभिव्यक्ति का प्रमाण है उन्होंने अपने संपूर्ण लेखन में मानवीय आदर्शों को स्थापित करने का प्रयास किया है।

मार्कण्डेय के 'साबुन' जैसी कहानी में बेरोजगार होती नयी पीढ़ी और मध्यवर्गीय मानसिकता का अंकन किया है। यह कहानी आर्थिक रूप से टूटते युवा वर्ग, उसके टूटते सपने और मध्यवर्गीय मानसिकता को केन्द्र में रखकर लिखी हुई है। सरकार की नयी–नयी विकास योजनाओं के आगमन और उनमें मची लूट–खसोट को लक्षित करने के साथ–साथ मार्कण्डेय ने व्यवस्था की दोहरी व क्रूर मानसिकता की कलई भी खोली है।

मार्कण्डेय ने 'चक्रधर' नामक छद्मनाम से 'साहित्य–धारा' के अंतर्गत तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी धारदार प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उनकी उन प्रतिक्रियाओं में तत्कालीन रचना–आलोचना संदर्भों की पड़ताल हुई है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि मार्कण्डेय जी दृष्टि–संपन्न कथाकार, समीक्षक के रूप में स्थापित करने में 'चक्रधर' और 'कल्पना' और 'साहित्य–धारा' की अहम भूमिका रही है।

मार्कण्डेय ने अपनी कहानियों का आधार उत्तर भारत के अवध प्रांत को बनाया है। परिवेश का सूक्ष्म एवं व्यापक चित्रण, भाषा मे ग्रामीण प्रादेशिक बोली की झलक आदि के कारण इनकी कहानियों में आंचलिकता के लगभग सभी तत्वों का समावेश मिलता है, परंतु इन कहानियों को महज आंचलिक कहना समीचीन नहीं होगा। इनकी शहरी परिवेश की कहानियों में एक ओर मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं को उठाया है तो दूसरी ओर इनमें यौन समस्या और सेक्स के चित्रण की प्रमुखता नजर आती है। मार्कण्डेय की अधिकांश कहानियाँ चरित्र प्रधान दिखाई देती है। इनमें 'गुलरा के बाबा', 'घूरा', 'मुंशीजी', 'रामलाल', 'सूर्या' तथ 'गनेसी' आदि प्रमुख है। मानव चरित्र के अतिरिक्त पशु–जीवन के मार्मिक चित्र भी इन्होनें प्रस्तुत किए है। इनमें 'सवरइया', 'कानी घोड़ी' सजीव है जो वास्तविक जीवन से लिए गए है और वे अपने वर्ग का सही प्रतिनिधित्व करते हुए दृष्टिगोचर होते है। ये पात्र वर्ग वैषम्य, शोषण, असमानता, रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध करते है। इस दृष्टि से उनकी 'नीम की टहनी', 'कल्यानमन', मधुपुर के सिवान का एक कोना', 'बीच के लोग', 'गनेसी' आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

मार्कण्डेय की अधिकांश कहानियों में नारी जीवन को केन्द्र में रखा है। इनके नारी पात्र ग्रामीण तथा शहरी परिवेश के अलग–अलग वर्गों के है। इनमें 'वासवी की माँ' की मृणालिनी, 'नीम की टहनी' की पियारी, 'घूरा' की घूरा, 'सात बच्चों की माँ' की सन्नो, 'एक दिन की डायरी' की शाला, 'मिस शांता' की शांता, 'महुए का पेड़' की दुखना, 'कल्यानमन' की मंगी, 'माही, 'बिन्दी' की बिन्दी, 'सूर्या' की सूर्या तथा 'प्रिया सैनी' की प्रिया आदि प्रमुख नारी पात्र है। लेखक ने नारी जीवन की व्यथा को कथा का आधार बनाकर नारी जीवन की करूणा को यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

मार्कण्डेय ने अपनी कहानियों में भूमि संबंधी समस्या, सरकारी विकास योजना, उच्च वर्ग द्वारा ग्रामीण किसान मजदूरों का शोषण, नारी शोषण आदि समस्याओं को प्रमुखता से चित्रित किया है। 'भूदान', 'आदर्श कुक्कुट गृह', 'बादलों का टुकड़ा' आदि कहानियों में इसका चित्रण प्रमुखता से दृष्टिगत होता है। कथ्य के साथ शिल्प पक्ष में भी लेखक सफल रहा है। विषय वस्तु की वैविध्यता, प्रभावोत्पादकता एवं रोचकता इनकी शैली की विशेषता है। इसमें वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, प्रत्यावलोकन शैली आदि का सफल प्रयोग किया है। अतः कहना सही होगा कि मार्कण्डेय एक प्रतिबद्ध रचनाकार है। इनकी कहानियाँ यथार्थ की जमीन पर अंकुरित होते हुए अपने समय के वस्तु–सत्य के प्रति इमानदार प्रतीत होती है।

निष्कर्षः

अतः रूप में कहा जा सकता है, कि मिस शांता, बिन्दी कहानी, माही कहानी, संग्रह में दूध और दवा, सतह की बाते, पक्षघात तथा बीच के लोग कहानी संग्रह में लंगड़ा दरवाजा, गनेसी, बयान, प्रिया सैनी आदि कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का सर्वांगीण क्षेत्र जीवन्त रूप में दिखाई देता है। वही भूदान, आदर्श कुक्कट ग्रह, जैसी कहानियों में विकास योजनाओं के नाम पर किसानों तथा गरीबों के शोषण को दिखाया गया है। नगरबोध से संबधित अपनी कहानियों में मार्कण्डेय ने मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविक समस्याओं एवं विसंगतियों आदि की समस्यों को यथार्थ संदर्भो में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। उनका माही संग्रह यौन कुठाओं को चित्रित करता है। अतः निर्ष्कष रूप में मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ और संजीव रूप हमें देखने को मिलता है। और वे कही बहुत हद तक मध्यवर्गीय पीड़ा की सवेदना को महसूस करके अपनी लेखनी में सफलतम रूप में उनके द्वारा पिरोया गया है।

REFERENCES

1. माहीः मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद 1964
2. बीच के लोग : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद 1975
3. आधुनिक हिन्दी कहानी चरित्र बोथः डॉ॰ ऊषा गुप्ता, ज्योति इन्टरप्राइजेज 2004
4. कहानी नई कहानीः डॉ॰ नामवर सिंह, लोक भारती, प्रकाशन 2006
5. नई कहानी नये सवालः सत्य काम, अनुपम प्रकाशन 2002

6. कहानी का समाज शास्त्रः डॉ॰ मधु संन्धू निर्मल पब्लिकेशनस् दिल्ली 2005

7. आठवें दशक की हिन्दी कहानी दाम्पत्य सदर्भों के संबंध मेंः मधु सिंह, राधा पब्लिकेशनस् नई दिल्ली, 1993

8. हिन्दी कहानी यथार्थ वादी नजरियाँ मार्कण्डेय, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2013

9. हिन्दी कहानी का सफरनामाः धनंजय वर्मा, प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली 2001